''प्रेक्षाध्यान आत्मा की ओर जाने की साधना है''

- युवाचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं, 14 अक्टूबर।

जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए युवाचार्य महाश्रमणजी ने कहा कि मनुष्य के भीतर अनेक वृत्तियां काम करती है और वृत्तियों के द्वारा आदमी अभिप्रेरित होता है अच्छा काम भी आदमी प्रेरणा से करता और गलत काम में भी प्रेरणा काम करती है।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि आदमी में रति, वृत्ति, और संतोष ये तीनों होते हैं। सामान्यत आदमी में रति प्रेम प्रियता में होती है और तृप्ति उसे भोजन आदि करने से मिलती है और संतोष या असंतोष धन आदि में रहता है ये सब बाह्य होते हैं। जो व्यक्ति उच्च कोटि की साधना करता है तो जो रति विषय भोगों के प्रति थी वह प्रेम भगवान के स्मरण में होने लग लग जाता है स्मरण करते हुए प्रभु में लीन हो जाता है वह विषय भोगों में नहीं जाता है, विषय भोगों के प्रति उसका आकषर्ण समाप्त हो जाता है। उसे आत्मा में ही आनन्द आने लग जाता है फिर उसे तृप्ति ध्यान आदि में मिलती है।

युवाचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान के साधकों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रेक्षाध्यान आत्मा की ओर जाने की साधना है आत्म साधना करते हुए आदमी आगे बढे तो वह गुस्से आदि पर नियंत्रण कर सकता है। आत्म संतोष को प्राप्त कर सकता है।